नवंबर, 2021

हरित ख़बर

सौहरखा ने कर दिखाया !

बारह एकड़ की बंजर जमीन कैसे एक हरा भरा जंगल बन गयी!
पढ़िए 'एचसीएल फाउंडेशन' और 'गिव मी ट्री ट्रस्ट' की इस अनूठी पहल के बारे में।

सह–अस्तित्व

इंसान और जानवरों के सह-अस्तित्व की कहानी को फिर लिख रहा है फ्रेंडिकोज़

पढ़िए पेज 2 पर

पराली और नये प्रयोग

साल के अंतिम महीने दिल्ली और इसके आस पास के क्षेत्रों के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण होते हैं। पराली जलाने और प्रदूषण से निदान के उपायों के बारे में पढ़ें

पेज 4–5 पर

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां

ग्लासगो में पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से सम्बंधित मुद्दों पर चर्चा

पेज 6 पर

COMICS POWER! WORLD COMICS INDIA

एच सी एल फाउंडेशन एवं वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया की एक पहल

HCL FOUNDATION

करुणा और सम्मान के साथ सहअस्तित्व है फ्रेन्डीकोज़ का मंत्र

मनुष्य पिछले हजारों वर्षों से पालतू जानवरों के साथ अपना भोजन, आश्रय और महत्वपूर्ण पल साझा करता रहा है। कुत्ते, बिल्ली, गाय, बकरी, भेड़, उंट, घोड़े और खच्चर पूरे इतिहास में हमारे साथी रहे हैं। दो चीज हमें इन जानवरों से जोड़ती है, वह है एक दूसरे के लिए करुणा और सम्मान।

'Friendicoes' नई दिल्ली में स्थित एक गैर सरकारी संगठन है जो जानवरों के प्रति करुणा की परंपरा को गर्व से आगे बढ़ा रहा है। 1970 के दौरान कुछ बच्चों ने बीमार और परेशान जानवरो के लिए एक छोटा समूह बनाया, इस छोटे समूह को चलाने के लिये जगह तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी द्वारा प्रदान की गयी थी।

फोटो : फ्रेन्डीकोज़

दो कमरे के छोटे से मकान में कुछ बीमार जानवरो को आश्रय मिला। समय के साथ लोग जुड़ते गए और 1979 में Friendicoes SECA की स्थापना हुई। आज यह संगठन विभिन्न प्रकार की गतिविधियां चलाता है। यह आश्रय के साथ–साथ जानवरों के लिए एक अस्पताल भी है। बीमार आवारा पशुओं के साथ–साथ मालिकों द्वारा छोड़े गए और खोए हुए पालतू जानवर आश्रय के लिए आते हैं। संकट में फंसे पक्षी और बंदर भी फ्रेन्डीकोज़ में शरण पाते हैं।

फ्रेन्डीकोज़ उन संगठनों में से एक है जो उन्हें अपनाते हैं और उनकी देखभाल करते हैं। इतना ही नहीं, वे पहले छोड़े गए इन जानवरों के नए घर खोजने में मदद करते हैं।

फ्रेन्डीकोज़ बुजुर्ग इंसानों और जानवरों दोनों का सम्मान करने की वकालत करता है। वे युवाओं के समान प्यार और स्नेह के पात्र हैं।

जानवरों की नसबंदी भी है एक समाधान

जानवरों के भीतर तेजी से होती जनसंख्या वृद्धि एक गंभीर मुद्दा है। लेकिन इन मुद्दों को संवेदनशील रूप से और जानवरों के लिए सम्मान सुनिश्चित करके सुलझाया जा सकता है। फ्रेन्डीकोज़ संगठन ने प्रति वर्ष 36,000 से अधिक जानवरों की नसबंदी की है। इस प्रकार नसबंदी एक स्वस्थ पशु आबादी सुनिश्चित करने का एक मानवीय तरीका साबित हो रहा है । नसबंदी न केवल आवारा कुत्तों और बिल्लियों की आबादी को नियंत्रित करती है, बल्कि इन जानवरों में आक्रामकता और बीमारियों के जोखिम को कम करने में भी मदद करती है। फ्रेन्डीकोज़ के बचाव घर में लगभग 150–200 जानवर निवास करते हैं।

फ्रेन्डीकोज़ की नई पहल

पिटबुल एक कुत्ते की प्रजाति होती है, जो आजकल शहरों में काफी फैशन में है। अतीत में ऐसे 'फैशन' में आयी हुई प्रजातियों को उनके मालिक पहले के तीन सालों में ही बाहर कर देते हैं। ऐसे लोग जो कुत्ते पालने का शौक रखते हैं मगर ज़िम्मेदारी नहीं, उन लोगों में पिटबुल के बारे में जागरूकता फ़ैलाने के लिए यह एक पहल है।

फ्रैंडिकोज जख्मी पिटबुल के उपचार से लेकर उन्हें नयी जिन्दगी के लिए तैयार करने का काम करता है। फ्रैंडिकोज ने 2017 – 2018 में 11 पिटबुल कुत्तों को बचाया। इनमें से अधिकतर उपचार होने के बाद वापिस अपना सामान्य जीवन बिता पाए।

मानव और वन्य जीवन के बीच बढ़ता द्वंद

धीरे धीरे हमारे जंगल कम हो रहे हैं, और उसके साथ ही कई जंगलों को सिर्फ मनुष्यों के उपयोग के लिए परिवर्तित किया जा रहा है। इसकी वजह से वन्य प्राणी जैसे हाथी, बाघ, तेंदुए और मनुष्यों के बीच मुठभेड़ बढ़ रही है। कई बार ऐसी मुठभेड़ जानवरों या मनुष्य के लिए खतरनाक साबित होती हैं। पिछले साल 2020 में अकेले महाराष्ट्र में मानव–वन्यजीव मुठभेड़ से 88 लोगों की मौत हुई। जैसा कि पर्यावरण मंत्रालय के आंकड़ों से राष्ट्रीय स्तर पर पता चलता है, 2014–5 से 2019 तक, लगभग 5 वर्षों में, हाथियों के साथ मुठभेड़ के कारण 2,361 मनुष्यों की मृत्यु हुई, वहीं इसी अवधि में 500 हाथियों को भी मार डाला गया। मानव और वनजीवों के तनाव का ही उदाहरण है कि तेंदुओं की मौत की संख्या 2019 में 110 से बढ़कर 2020 में 172 हो गई।

स्रोतः विभिन्न मीडिया संस्थान

पौधा-पौधा बनता जंगल

उदय उपवन 'गिव में ट्रीज ट्रस्ट' की एक अनूठी पहल है। इसके तहत ट्रस्ट ने एचसीएल फाउंडेशन के साथ मिल कर बारह एकड़ बंजर और कांटेदार भूमि को छोटे वन में तब्दील कर दिया है।

यह वन सौहरखा गाँव, गौतम बुद्ध नगर में है और वन के रख–रखाव के लिए प्रशासन और समुदाय दोनों ही जुड़े हैं।

यहाँ 66 हज़ार से भी अधिक वृक्ष और पौधे हैं, साथ ही दो बड़े तालाब और आठ छोटे बांध हैं। गाँव से बहने वाले कचरे और प्रदूषित पानी के उपचार के लिए वॉटर ड्रेनेज सुविधा प्रबंधन है जिसके लिए जल वनस्पति इस्तेमाल होती है।

इस प्रकार के भूमि परिवर्तन से सभी जीवों को फायदा पहुंचा है, 23 प्रजातियों के पक्षी सहित कई प्रकार की तितलियाँ, मधुमक्खियां, सांप इत्यादि अब उदय उपवन को अपना घर मानते हैं।

ट्रस्ट की इस पहल से गाँव वासियों को भी कुछ फायदे हुए हैं, जैसे साफ़ पानी के लिए वैकल्पिक स्त्रोत का मौजूद होना और अपने मवेशियों को चराने की जगह उपलब्ध होना।

गौतम बुद्ध नगर के जिला प्रशासन के सकारात्मक सहयोग के चलते सौहरखा का यह प्रयास रंग लाया है। भारतीय वन सर्वेक्षण रिपोर्ट 2017 के अनुसार, गौतम बौद्ध नगर (नोएडा) जिले में केवल 1.56 प्रतिशत हिस्से में ही वन क्षेत्र है। ऐसे में शहर के बीच उगते जंगल का यह हरित प्रयास अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। लगातार घटते भूजल स्तर और कम होते वन क्षेत्र से निपटने के लिए उदय उपवन, सौहरखा का यह प्रयोग पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप की एक मिसाल है।

पीपल बाबा, पेड़ और सामुदायिक भागीदारी

आज़ाद जैन उर्फ पीपल बाबा

आज़ाद जैन जिन्हें पीपल बाबा के नाम से जाना जाता है, दिल्ली में रहते हैं और पूरे देश में वृक्षारोपण के मुद्दे पर काम करते हैं। जब पीपल बाबा दस साल के थे, तो उनके स्कूल के शिक्षक ने उन्हें पेड़ लगाने का मूल्य सिखाया था। वह अंग्रेजी साहित्य के छात्र थे, लेकिन उन्हें प्रकृति का साहित्य ज्यादा रास आया! वृक्षों के संरक्षण और सामुदायिक भागीदारी के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उनकी प्रसंशा की जाती है।

उनका जीवन अनुभव दर्शाता है कि पर्यावरण की भलाई में योगदान करने के लिए हमारे पर्यावरण के लिए काम करने की भावना ही सबसे प्रमुख जरूरत है। वह सामुदायिक कार्यो में सबसे आगे हैं और वृक्षारोपण और इसके संरक्षण के गंभीर मुद्दे को सरल तरीके से निपटाते हैं।

संस्था के बारे में

पीपल बाबा द्वारा स्थापित संगठन 'गिव मी ट्री ट्रस्ट' पेड़ों के रखरखाव और वृक्षारोपण के मुद्दे पर काम करता है। संस्था खाद बनाने, शहरी वन बनाने, कौशल विकास और नर्सरी विकसित करने जैसे मुद्दों पर ट्रस्ट काम कर रहा है।

'गिव मी ट्री' ट्रस्ट न्यूनतम और टिकाऊ मॉडल पर विश्वास करता है। खाद बनाने, घरों की रसोई के कचरे, गाय के गोबर और वर्मी–कम्पोस्ट से खाद बनाने के लिए लागों को प्रशिक्षित करता है।

ट्रस्ट भूमि की पहचान करता है, सरकार की अनुमति लेता है और वृक्षों के विकास की योजना बनाता है। वे दान की गई और बंजर भूमि का उपयोग रोपण के लिए करता हैं।

हरित आंकड़े

गिव मी ट्री ट्रस्ट भारत के 17 राज्यों में सक्रिय है और इससे 16,000 से अधिक स्वयंसेवक जुड़े हैं। भारत में अब तक ट्रस्ट के माध्यम से लगभग 2 करोड़ पेड़ों को लगाया गया है, जिसमे से 1 करोड़ 20 लाख पीपल, 40 लाख नीम और 20 लाख अन्य देशी फल के पेड़ हैं।

ट्रस्ट ने अब तक 700 गाँव और 600 स्कूलों के साथ वृक्षारोपण के मुद्दे पर साझेदारी की है। इसके साथ ही ट्रस्ट ने अपने कार्य से 200 से अधिक शहरों और कस्बों में बदलाव लाने की एक पहल की है।

एक नजर : भारतीय शहरों में वन और हरित क्षेत्रों का वितरण

शहरों में बढ़ते विकास के कारण हरियाली और सींचने योग्य जमीन कम हो रही हैं। ऐसे हरित क्षेत्रो को जीवित रखने के लिए भारत के कुछ बड़े शहरों ने हरित क्षेत्र और वन बढ़ाने की योजना बनायी। हाल ही में हुए अध्ययन के अनुसार 56% के वन आवरण के साथ दिल्ली पहले स्थान पर है जबकि कोलकाता 52% के साथ दूसरे स्थान पर है।

Google Earth की Landsat सैटेलाइट आधारित डेटा का उपयोग करते हुए, शहर के

वन और हरित कवर को जानने के प्रयास में यह अध्ययन किया गया था। 51% वन क्षेत्र के साथ बैंगलोर और हैदराबाद तीसरे और चौथे स्थानों पर हैं।

हालांकि, चेन्नई और मुंबई में कुल वन क्षेत्र 50% से कम हैं, चेन्नई में 43% और मुंबई में 12% है। भारत ने 2015 में हुए पेरिस क्लाइमेट डील में अपने कुल वन क्षेत्र 21% से बढ़ा कर 33% तक करने का संकल्प लिया था।

दादा बोये पोता खाये

Shalini Pathak

पराली, प्रदुषण और आधुनिक कृषि समाधान

फोटो : ET

खरीफ की फसल की कटाई के बाद खेतों को जलाने का क्रम बरसों से चला आ रहा है, मगर बीते कुछ वर्षों में यह राजधानी क्षेत्र में बढ़ते वायु प्रदूषण के मुख्य कारणों में एक बन गयी है। पंजाब समेत हरियाणा, राजस्थान और यूपी में भारी मात्रा में पराली के जलने के कारण दिल्ली में अक्टूबर–नवंबर के महीने में अक्सर वायु प्रदुषण का स्तर बद से बदतर हो जाता है। वायु प्रदुषण के अनेक कारण भी हैं, आईआईटी–कानपुर द्वारा किए गए 2015 के एक अध्ययन के अनुसार सर्दियों में दिल्ली में वायु प्रदूषण का 17–26 % पराली या दूसरे बायोमास जलने के कारण होता है।

दिल्ली में वायु प्रदूषण इतना हानिकारक है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, भारत के सबसे प्रदूषित राज्य उत्तर प्रदेश और दिल्ली में यह हमारी जीवन आयु को 9 वर्ष तक कम कर रहा है। AQI या एयर क्वालिटी इंडेक्स का इस्तेमाल वायु की गुणवत्ता बताने की लिए होता है। वैज्ञानिको का मानना है की 100 से अधिक AQI हमारे स्वस्थ्य की लिए हानिकारक है। दिल्ली में अक्टूबर और नवंबर में औसतन AQI 250 – 350 के बीच हो जाता होता है, जो बेहद गंभीर है।

क्यों जलाते है किसान पराली?

कृषि परंपरा के अनुसार फसल की कटाई के बाद पराली जलाने से खेत दोबारा उपयोग करने के लिए योग्य हो जाते हैं। इससे किसानों का समय और मेहनत दोनों ही बचते हैं। संसाधन की कमी के चलते किसान आधुनिक तकनिकी का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। तकनिकी उपाय महंगे होते हैं और इस वजह से किसान इन्हे इस्तेमाल करने से झिझकते हैं। सरकार ने कृषि के क्षेत्र में सुलभ तकनिकी उपायों पर हाल ही में ज़ोर देना शुरू किया है। इससे निपटने के लिए भारत सरकार दिल्ली समेत पंजाब, हरियाणा और यूपी की राज्य सरकारों के साथ मिलकर समाधान ढूंढने के प्रयास में लगी है।

फोटो : DNA News

'पूसा स्प्रे' – आधुनिक समस्याओं का आधुनिक समाधान

इस प्रकार की समस्या के उपाय में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। यही वजह रही की दिल्ली स्तिथ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा ने नवीन तकनीक के ज़रिए एक यंत्र बनाया। इस यंत्र को 'बायो देकंपोज़र' या 'पूसा स्प्रे' कहते हैं। पूसा स्प्रे का उपयोग पराली को खाद्य पदार्थ में बदलने के लिए होता है और यह एक सस्ता और टिकाऊ उपाय है। इससे न केवल पराली खाद्य पदार्थ में तब्दील होती है, बल्कि इससे किसान अपने खेत में अलग तरीके से उपयोग कर सकते हैं। इसका उपयोग धीरे धीरे बढ़ने की अपेक्षा है, और उदेश्य है कि पराली को जलने से पूर्ण रुप से रोका जाए।

'हैप्पी सीडर्स'

कृषि मंत्रालय ने पराली की समस्या से निपटने के लिए 'हैप्पी सीडर्स' के उपयोग की पहल की है। हैप्पी सीडर्स एक ट्रैक्टर उपकरण है जो लगी हुई फसल को काट और उठा सकता है। इस उपकरण से बीज लगाने में भी मदद मिलती है। हालांकि कृषि विषेशज्ञ बताते हैं कि हैप्पी सीडर्स एक भारी उपकरण है और इसके उपयोग के लिए सक्षम ट्रैक्टर की आवश्यकता होती है। किसानों के पास हमेशा ऐसे ट्रैक्टर उपलब्ध नहीं होते हैं। इस कारण से हैप्पी सीडर्स का उपयोग सीमित रूप से होता है।

पराली से ऊर्जा!

नई दिल्ली स्थित ऊर्जा और संसाधन संस्थान (टेरी) के वैज्ञानिकों ने पराली के उपयोग का एक अनूठा प्रयोग किया है। टेरी के कृषि वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रामीण स्तर पर कोल्ड स्टोरेज इकाइयों के ईंधन के रूप में पराली को उपयोग कर सकते हैं। इसे बायोमास ऊर्जा उत्पादन के लिए परिवर्तित करने से पराली से स्थायी ऊर्जा का उत्पादन होगा और पराली से होने वाला वायु प्रदुषण भी कम होगा। बागवानी करना (फल, आदि उगाना) यूँ तो महंगा होता है और फलों को तुरंत स्थानीय बाजारों में बेचना पड़ता है। बायोमास से चलने वाले कोल्ड स्टोरेज की सुविधा इस समस्या को हल कर सकती है।

ईको ऑस्कर – 'टकाचार'

eco OSCAR

इंग्लैंड के प्रिंस विलियम और रॉयल फाउंडेशन द्वारा स्थापित अर्थशॉट प्राइज (पुरस्कार) नवीन और सरल आविष्कारों के लिए दिया जाता है। इसे 'इको ऑस्कर' भी कहते हैं और इस साल एक भारतीय कंपनी, 'टकाचार' को वायु प्रदूषण की श्रेणी में पुरुस्कार मिला। इस पुरस्कार की 5 श्रेणियां हैं, वायु प्रदूषण, समुद्र प्रदुषण, कचरा प्रबंधन, प्रकृति का रखरखाव और वैज्ञानिक क्षमता बढ़ाने के अध्ययन और इनसे बचने के नवीन उपायों के लिए। टकाचार दिल्ली में स्तिथ एक कंपनी है जिसने ऐसी तकनीक विकसित की है जो कृषि से निकले कचरे को ईंधन और उर्वरक में परिवर्तित करती है। प्रतियोगिता में दुनिया भर से लोगों ने भाग लिया था, 'टकाचार' को 'क्लीन अवर एयर' श्रेणी (साफ़ हवा – वायु प्रदुषण) के तहत विजेता घोषित किया गया।

मशरुम की खेती भी है एक समाधान

मशरुम की खेती, पराली जलाने की परंपरा के एक विकल्प के रूप में सामने आ रहा है। मशरुम की खेती से अनेक लाभ हैं। द मशरूम काउंसिल के अध्ययन के अनुसार, मशरूम की खेती अन्य सब्जियों की तुलना में कम कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ती है, इसके लिए कम भूमि की आवश्यकता होती है और इसे उगाना भी सस्ता होता है। खेत में कटाई के बाद पराली जलाने के कारण मिट्टी के कुछ महत्त्वपूर्ण पोशक तत्त्व भी नष्ट हो जाते हैं। मशरुम की खेती में ऐसे पोशक तत्त्वों का उपयोग होता है और ये कम लागत में बेहतर उपाय प्रदान करता है। मशरुम की उपज में एक से दो महीने का समय लगता है और पराली को जलाये बिना भूमि के उपयोग के लिए यह पर्यावरण के अनुकूल है।

वैकल्पिक आय का एक माध्यम मशरुम

असल में, खेत से निकला अधिकतर कार्बनिक कचरा मशरुम की उपज के लिए आदर्श होता है। इसके लिए पराली का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है जैसे कि गेहूं और धान का भूसा, केले के पत्ते, चाय की पत्ती, कपास का भूसा, आदि। फसल की कटाई के बाद खेतों में बचे पुआल/ फूस में पोशक तत्त्व होते हैं जिसका उपयोग मशरुम को उगाने के लिए काफी लाभदायक होता है। और ये खेतो को उपजाऊ बनाये रखता है। मशरुम का उपयोग खाने के साथ ही साथ उगाने वाले के लिए बाजार में बेचने का एक नया अवसर भी देता है।

दैमारी ने दिया मशरूम लगाने का प्रस्ताव : एक ग्रामीण व्यक्ति को घास फेंकते हुए देखकर, दैमारी उसे यह करने से मना करते हैं. उनका मानना है की वैसे घास उसे बहुत फायदा पोहचा सकता हैं यदि वह मशरुम के खेती में प्रयोग हो पाए. वह उसे मशरूम की खेती की प्रक्रिया समझाते हैं. प्रक्रिया का वर्णन करते हुए वह उसे बैग को कुछ दिनों के लिए संचयन करने की सलाह देते हैं। उसके बाद बैग को नम कमरे में लटका देना चाहिए। वह व्यक्ति यह देखकर खुश होता है कि मशरूम उगना एक दिलचस्प प्रक्रिया है और आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ते हैं। वह बाजार में मशरूम बेचता है और खुश होता है कि उसने कुछ पैसा कमाया। कहानी व कला रूसिमंता बोरो

मशरूम डेवलपमेंट फाउंडेशन के अभिनव प्रयोग

मशरूम डवलपमेंट फाउंडेशन असम में स्तिथ एक गैर सरकारी संस्था है। कुपोषण और आजीविका के मुद्दों के उपाय के लिए संस्था मशरूम की खेती को बढ़ावा देती हैं। प्रांजल बरुआ संस्था के सह–संस्थापक हैं और मुख्य रूप से कृषि समुदाय के साथ जुडकर कृषि आजीविका के लिए काम करते हैं।

मशरूम डेवलपमेंट फाउंडेशन द्वारा आयोजित "कठफुल्ला हाट" संग्रह और वितरण केंद्र (मशरूम बाजार) किसानों को एक ऐसा मंच देता है जिससे किसान सीधे तौर से ग्राहक को मशरुम को बेच सकते हैं।

फाउंडेशन ख़ास तौर पर ऐसे किसानों के साथ काम करती है जो सामाजिक और आर्थिक रूप से ज़रूरतमंद हो। इसका चयन आवश्यकता और रुचि के आकलन के आधार पर किया जाता है।

फाउंडेशन महिलाओं और आर्थिक तौर से पिछड़े समुदायों के साथ जुडी है। संस्था ने मशरूम की खेती की तकनीक में 100 से अधिक किसानों को प्रशिक्षित किया। लगभग 200 महिला किसानों के साथ जुड़कर मशरुम उगाने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

महिला किसान के साथ मिल कर मशरुम के खेती से पहले ही वर्ष में 25 लाख रुपये से अधिक का कारोबार किया। संस्था की एक अहम् उपलब्धि मशरुम किसानों को बाजार तक बेहतर पहुँच देने के लिए 125 संग्रह एवं वितरण केंद्र भी प्रारम्भ करना है।

दुनिया भर से

पानी की कमी से जूझता दक्षिण अफ्रीका

पिछले एक दशक से दक्षिण अफ्रीका कठोर मौसम से जूझ रहा हैं। इसके कारण सूखा पड़ना और जल संसाधनों की कमी अब सामान्य घटना हो गयी है। दक्षिण अफ्रीका की राजधानी केप टाउन में 2018 में 'डे ज़ीरो' का सामना किया जिसमे 37 लाख निवासियों को पानी की कमी का लगातार सामना करना पड़ा। 'डे ज़ीरो' उस दिन के नाम पर रखा गया जब केप टाउन को गंभीर रूप से पानी की समस्या का सामना करना पड़ा था, जल स्तर 20 प्रतिशत से नीचे चला गया था।

कचरा साइट बना स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स

जापान की रिसायकल प्रक्रिया अपने नयी सोच और तकनीक के लिए जानी जाती हैं। इस प्रथा को बनाये रखते हुए हाल ही में जापान की राजधानी टोक्यो में एक अपशिष्ट भूमि को, इसे अंग्रेजी में 'लैंडफिल' कहते हैं, स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया है। टोक्यो मेट्रोपोलिटन गवर्नमेंट का यह निर्णय शहर को सुन्दर बनाने और घटते पौधे और पशु की जनसंख्या को देखते हुए किया है। इससे दुर्लभ प्राणियों और पौधो को भी फायदा पहुंचेगा और पर्यावरण में अपशिष्ट द्वारा नुक्सान भी सीमित रहेगा।

ब्राज़ील में आया सूखे का संकट

दक्षिण अमेरिकी राष्ट्र ब्राज़ील के ऊर्जा मंत्रालय की एक समिति के अनुसार ब्राजील ने सितंबर 2020 से जून 2021 के बीच पिछले 91 वर्षों में सबसे कम वर्षा दर्ज की है। ब्राज़ील में स्थित अमेज़न जंगल और उसके आस पास में सूखा बदतर होता जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी, विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के एक अध्ययन से पता चलता है कि 2020 में, इन क्षेत्रों में सूखा 50 वर्षों में सबसे चरम था।

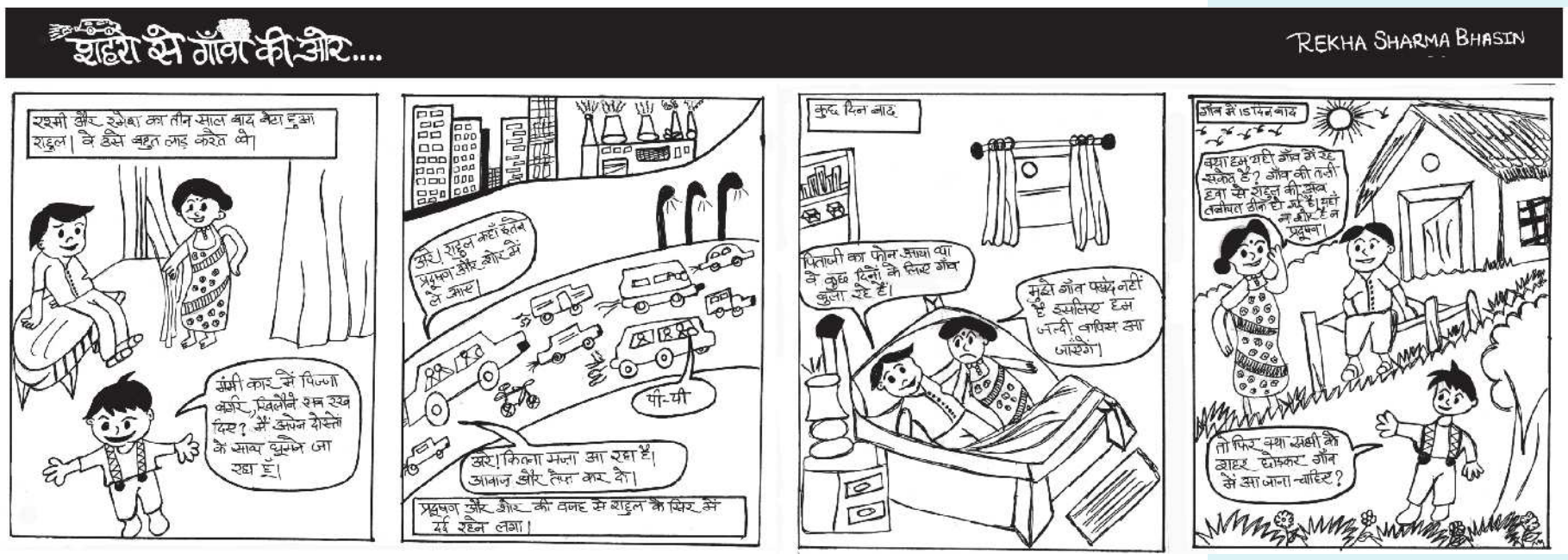

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के खिलाफ लड़ाई तेज

ग्लासगो, स्कॉटलैंडः नवंबर में हुई सीओपी 26 सम्मलेन जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) और उससे जुटी सहायता के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बैठक है। वास्तव में 'कांफ्रेंस ऑफ़ पार्टीज' जिसे सीओपी के नाम से भी जानते हैं, इसका सम्मलेन 2020 में निर्धारित किया गया था मगर कोविड महामारी के कारण स्थगित कर दिया गया।

अब 2021 में दुनिया भर से नेता ग्लासगो में पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से सम्बंधित मुद्दों पर मिले।

सीओपी 26 सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र के 'जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन' के तहत होता है और 197 देश इसमें भाग लेते हैं। हालांकि सम्मेलन में निर्णायक शक्ति विकसित और अमीर देशों के पास है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अमेरिका, जर्मनी और इंग्लैंड जैसे देश आर्थिक रूप से सुरक्षित हैं।

इसके साथ ही अधिकतर विकासशील देश आर्थिक सहायता के बिना जलवायु परिवर्तन के हानिकारक परिणाम के विरुद्ध सामना नहीं कर सकते हैं।

सीओपी 26 का एजेंडा

2021 के सम्मेलन के चार प्रमुख बिंदु हैं।

1) 'ग्लोबल नेट जीरो' और 2050 तक डेढ़ डिग्री सेलसियस से अधिक वृद्धि पृथ्वी के तापमान में ना होने पाए। 'ग्लोबल नेट जीरो' का मतलब है कार्बन उत्सर्जन और कोयला आदि के उपयोग को सीमित रखना। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वन संरक्षण और वृक्षारोपण मुख्य बिंदु है। इसके साथ ही स्वच्छ ऊर्जा में निवेश और कोयला और पेट्रोल, डीजल को फेज आउट (उपयोग से बाहर) करना अति आवश्यक हैं।

2) जलवायु परिवर्तन से प्रभावित समुदायों और प्राकृतिक ठिकानों की रक्षा। समुद्री तट के पास रहने वाले और खेती पर निर्भर समुदाय जलवायु परिवर्तन से अति संवेदनशील हैं। ऐसे में सी. ओपी 26 का उद्देश्य है कि आजीविका और उससे जुड़े मुद्दों पर समुदायों को सशक्त बना सकें।

3) चुनौतियों के लिए आर्थिक मदद, यह एक विवादास्पद मुद्दा भी है इस चुनौती को मुख्य बिंदु के रूप में देख सकते हैं। विकासशील देशों की मांग है कि विकसित देशों को अधिक योगदान करने की ज़रूरत है। आर्थिक सहायता के बिना इससे मुकाबला करना लगभग असंभव है।

4) साथ मिल कर काम करें, दी गयी कार्यसूची को पूरा करने के लिए अब 'क्लाइमेट एक्शन' – जलवायु क्रिया की आवश्यकता है। इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों को साथ आना होगा और उद्योगों और आम लोगों को भी साथ में ले कर चलना होगा।

भारत ने लिया नया संकल्प : सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन से सामना करने के लिए भारत की भूमिका, एक विकासशील देश के रूप में महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री ने भारत के प्रतिनिधि के तौर पर दो बड़े संकल्प लिए हैं। पहला, 2030 तक अपने कुल ऊर्जा उत्पादन का 50 प्रतिशत स्वच्छ और नवीकरणीय स्रोत से प्राप्त करना। दूसरा, 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करना। भारत ने वायु में कार्बन से हो रहे प्रदूषण को 2030 तक 45 प्रतिशत तक कम होने का वचन भी लिया है। ऐसे में देखना होगा कि ऐसे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कौन से उचित कदम उठाये जाते हैं।

पर्यावरण के लिए जरुरी कचरे का प्रबंधन

जैसे–जैसे हमारा समाज और अर्थव्यवस्था विकसित होती है, कचरा पैदा करने की हमारी प्रवृत्ति भी उसी अनुपात में बढ़ती जाती है। हमारे अधिकांश कचरे में खाघ पदार्थ, प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरा (ई–कचरा) होता है। कुछ कचरे को पुर्ननवीनीकरण और पुनः उपयोग किया जा सकता है। पुनः उपयोग से लोगों की आजीविका में भी मदद मिलती है। कपड़े और स्टेशनरी जैसे कार्बनिक कचरे का व्यापक उपयोग होता है। इनसे फैशनेबल उत्पाद भी बनाए जा सकते हैं। इस विचार को 'यूज़ मी' द्वारा अपनाया गया है जो महिला सशक्तिकरण और हानिकारक कचरे के प्रबंधन के लिए काम करता है।

कचरा प्रबंधन में हम कैसे योगदान दें?

यूज़ मी एक एनजीओ है जो महिला श्रमिकों की मदद से टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को बेचती है जिसे आमतौर पर बेकार माना जाता है। यह कमजोर समुदायों की महिलाओं को उनके कौषल का उपयोग करने और एक सार्थक आजीविका हासिल करने के लिए एक मंच प्रदान करके उनकी मदद करता है। आप लैपटॉप बैग, आधुनिक एक्सेसरीज, स्टेशनरी और फेस मास्क जैसे कई पर्यावरण के अनुकूल उत्पाद खरीद सकते हैं। वे प्रति माह 200 किलोग्राम तक कचरा बचाते हैं। हर बेकार वस्तु वास्तव में उनके लिए धन है।

रीसायकल प्रक्रिया - जर्मनी

रीसाइक्लिंग का अर्थ हैं, कचरे को पुनः इस्तेमाल करने की वस्तु में तब्दील करना। रीसायकल क्रिया धीरे धीरे अपना महत्त्व स्थापित कर रही है। जर्मनी बड़े पैमाने पर कचरे का उत्पादन करता हैं। जर्मनी 400 मिलियन टन से अधिक कचरे का उत्पादन करता है लेकिन अपने कचरे का **78%** भाग रिसायकल करने में सक्षम है।

जर्मनी में सरकार बड़े स्तर पर रिसायकल क्रिया के लिए आर्थिक मदद देती है। इसके अलावा, कचरे को रंग से टैग करके वर्गीकृत किया जाता है। कचरे के ठीक वर्गीकरण से रिसायकल करने की क्षमता बढ़ती है और इसकी प्रक्रिया में मदद करता है। इलेक्ट्रॉनिक कचरे को एक विशिष्ट स्थान पर जमा किया जाता है जिसे 'रीसाइक्लिंग सेंटर' कहा जाता है, इसके केंद्र शहर में कुछ खास क्षेत्रों में होते हैं।

जर्मन रीसाइक्लिंग प्रक्रिया रंग के अनुसार वर्गीकृत छह अलग–अलग डिब्बे का उपयोग करता है। पीला प्लास्टिक के लिए, नीला कागज और कार्डबोर्ड के लिए, सफेद, भूरा और हरा अनेक प्रकार के कांच के लिए, और छठा बिन खाद्य अपशिष्ट और कार्बनिक पदार्थों के लिए है।

संभावित रूप से खतरनाक उत्पादों जैसे बैटरी, लाइट बल्ब और फ्लोरोसेंट ट्यूब को इनमें से किसी भी डिब्बे में नहीं रखा जा सकता है और उन्हें विशेष रीसाइक्लिंग बिंदुओं पर ले जाना चाहिए। नागरिकों को अपने कचरे को सावधानी से अलग करना पड़ता है। नागरिको की भागीदारी इसकी सफलता का मुख्य कारण रहा है।

स्रोतः अर्थ स्क्वाड डॉट कॉम

समाचार पत्र का यह भाग ख़ास हमारे युवा पाठकों के लिए है। पर्यावरण के प्रति लगाव बढ़ाने के लिए नीचे कुछ दिलचस्प अभ्यास दिए गए हैं। छोटी–छोटी वस्तु जिसे हम कूड़ा समझकर फेंक देते हैं हमारे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में बड़ा योगदान कर सकते हैं। ऐसे कुछ सरल अभ्यास के द्वारा हमारा प्रयत्न युवा पाठकों को प्रकृति से जुड़े मुद्दों के प्रति सक्रिय करना है।

घरेलू गौरैयों के लिए घोंसला

घरेलू गौरैया दिल्ली की राजकीय पक्षी है। यह एक घरेलू पक्षी है जिसने पूरे देश में, हर गांव और शहर में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। पिछले 25 वर्षों में गौरैया की आबादी तेजी से घटी है और वर्तमान में एक लुप्तप्राय पक्षी प्रजाति बन गई है। उनके लिए घोंसला सुनिश्चित करके उनका पुनर्वास कर सकते हैं। केवल छह चरणों में उनके लिए आरामदायक घोंसले बनाकर उनकी मदद कर सकते हैं!

आपको क्या चाहिए होगा –
1. बांस की छड़ें, 2. कपड़ा, 3. चूड़ी, 4. धागा/रस्सी 5. सूखी घास 6. कैंची

चरण 1 – बाँस की डंडियों से 5 छल्ले बना लें

चरण 2 – बांस के छल्ले को जोड़कर एक गोलाकार संरचना बनाएं, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है

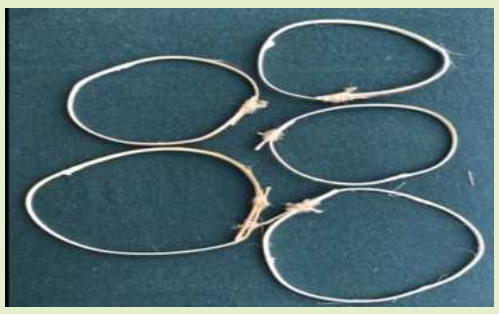

चरण 3 – चूड़ी को पक्षी के प्रवेश और निकास बिंदु के रूप में जोड़ें और धागे से कस लें और सबसे नीचे बांस की डंडी रख दें

चरण 4 – पूरे ढांचे को कपड़े से ढ़क दें और प्रवेश क्षेत्र के लिए चूड़ी क्षेत्र में एक छोटा छेद बनाएं

चरण 5 – इसके चारों ओर समान रूप से घास फैलाएं और इसके चारों ओर घास को रस्सी या धागे से लपेट दें। एक कुशल प्रवेश बिंदु बनाएं

चरण 6 – पक्षी को आकर्षित करने के लिए बांस की छड़ी पर अनाज रखें

स्रोतः 'इको रूट्स फाउंडेशन'

1 से 37 तक नंबर जोड़कर देखें क्या बनता है

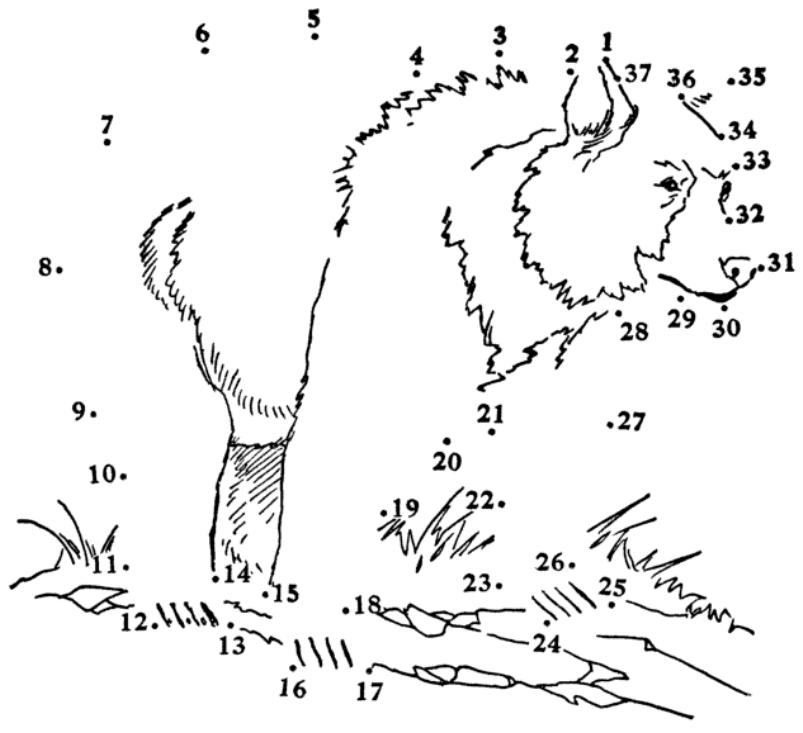

त्यौहार में बनाएं आकर्षक लिफाफा

त्यौहार सबसे मिलने का और उपहार देने का अनोखा अवसर होता है। यूँ तो उपहार लपेटने के लिए प्लास्टिक का प्रयोग होता है, मगर इस उत्साह को हम ईको–फ्रेंडली लिफाफा अपने उपहार के लिए बना कर अधिक विशेष बना सकते हैं। अपना लिफाफा खुद से बनाने का एक अपना मजा है!

अपना लिफाफा बनाने के लिए आपको चाहिए –
1. समाचार पत्र या पेपर के बैग
2. पुराने किताबों के साफ़ पन्ने
3. पुराने कपड़ो के छोटे टुकड़े
4. धागा या पतली रस्सी
5. कुछ नए फूल और ताज़ा पत्तियों का संग्रह
6. टेप या गोंद

आप नीचे दिए गए 4 चरण में अपना लिफाफा बना सकते हैं:

1. काग़ज़ को अपने भेंट के ढांचे अनुसार काट लें
2. उसे भेंट के चारो ओर लपेट कर टेप या गोंद लगाएं
3. लिफाफा लपेट कर कपड़े के छोटे टुकड़े या रस्सी से बांध लें
4. हम इस पर रिबन को फूल या पत्तियों के संग्रह से बदल कर और सुन्दर बना सकते हैं

चलो, सेही को मशरूम तक पहुंचाएं

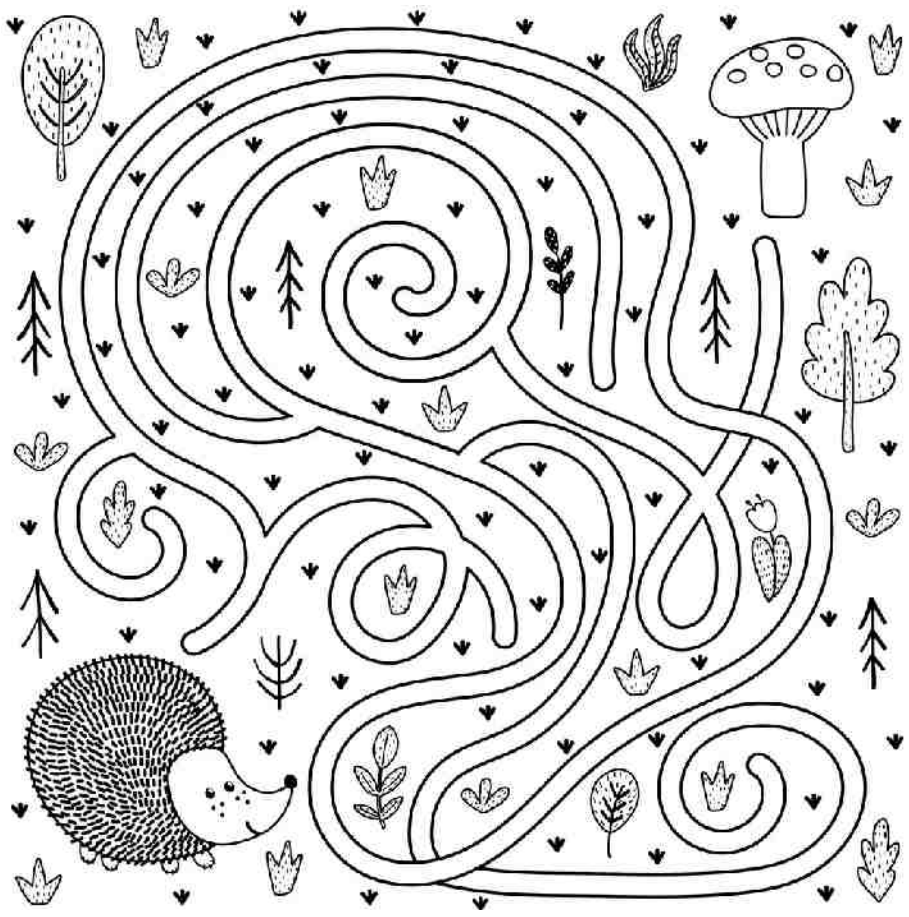

ग्रीन दिल्ली एप्प

पिछले साल दिल्ली सरकार ने 'ग्रीन दिल्ली' के नाम से एक मोबाइल फ़ोन एप्प की शुरुआत की। इस एप्प से दिल्ली के निवासियों को वायु प्रदूषण से सम्बंधित शिकायत करने के लिए केवल अपने फ़ोन में रखे एप्प से 'एडवांस ग्रीन रूम' से सीधा संपर्क करना होता है। पिछले साल इस एप्प पर 27,000 लोगों ने शिकायत दर्ज की थी। नीचे दिए गए क्यू आर कोड द्वारा आप इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।

ग्रासरूट्स कॉमिक्स बना पर्यावरण शिक्षा का एक ज़रिया

जलवायु परिवर्तन का मुददा इस कदर गंभीर हो चला है कि अब पर्यावरण और पर्यावरण शिक्षा को नजरअंदाज करना नामुमकिन है। समय आ गया है कि पर्यावरण शिक्षा को किताबों की दुनिया से बाहर, आम लोगों तक पहुंचाया जाये। ऐसी ही एक अनूठी पहल वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया द्वारा की गयी है।

वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया ने कहानियों और ग्रासरूट्स कॉमिक्स के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा को सहज और आम लोगों से जोड़ कर मनोरंजक बनाया है।

जहाँ पर्यावरण के ऊपर सार्वजनिक वाद – विवाद की एक कमी खल रही थी, वहीं कॉमिक्स वर्कशॉप के द्वारा लोग पर्यावरण को अब अपनी असल जिन्दगी की कहानियों से जोड़ कर समझ रहे हैं।

पर्यावरण की कहीं दूर दराज की घटनाएं लोगों को उतना प्रभावित नहीं करती जितना कि उनके आसपास होने वाली घटनायें कर पाती है।

वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया ने ग्रासरूट्स कॉमिक्स पद्धति का इस्तेमाल करते हुए एचसीएल फाउंडेशन के दस से भी अधिक पार्टनर आर्गेनाइजेशन के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया ।

इन प्रशिक्षणों के दौरान लोगों ने न सिर्फ अपने मुद्दों को पहचाना, उन पर कहानी लिखना सीखा बल्कि उन्हें चित्रों में ढालकर कैसे कॉमिक्स की शक्ल दी जाये, यह भी जाना।

जहां, इस दौरान उत्तराखंड की 2013 की बाढ़ और चीड़ के पेड़ के बहुल उपयोग की कॉमिक्स बन कर तैयार हुई, वही रसायन युक्त सब्जी, लुप्त होती प्रजातियों जैसे गोरैया और गिद्द की कहानियां भी लोगों ने सुनाई, इसके अलावा छत पर सब्जियां उगाने के प्रयोग और कम्पोस्ट तैयार करने को भी कॉमिक्स पोस्टर की शक्ल में ढ़ाला गया।

आम लोगों की पर्यावरण से जुडी कहानियों और उनके निजी अनुभवों पर बनी कॉमिक्सों का यह संकलन अब छपने के लिए तैयार है और जल्द ही पाठकों के हाथ में होगा। अगले चरण में भारत के दक्षिणी राज्यों की कहानियों को संकलित करने की तैयारी है।

एक थी गौरैया

AJAY SRIVASTAVA

इको रूट्स फाउंडेशन

'इको रूट्स फाउंडेशन' पक्षियों के संरक्षण के काम में जुटा है। फाउंडेशन के संस्थापक राकेश खत्री पेशे से एक फिल्म निर्माता हैं, साथ ही पक्षियों, घोंसलों और प्रकृति संरक्षण के जरूरी मुददों पर संवेदनशीलता और जागरूकता फैलाने का काम करते हैं। उनका लक्ष्य बच्चों के बीच पर्यावरण शिक्षा को बढ़ाना है। फाउंडेशन की पहल 'हरित साक्षरता मिशन' विशेष जरुरत वाले बच्चों को उनकी पर्यावरण में भागीदारी को विकसित करने को समर्पित है।

लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड ने इको रूट्स फाउंडेशन को दो बार सम्मानित किया है। पहला 'देश भर में हाथ से घोंसले बनाने का तरीका सिखाने के लिए सबसे अधिक संख्या में कार्यशालाएँ आयोजित करने के लिए और दूसरा 'जलवायु परिवर्तन पर सबसे बड़ा थिएटर कार्यक्रम, जिसमें 12 भाषाओं में प्रदर्शन के साथ 1,12,000 छात्र शामिल हुए'।

सिनेमा के माध्यम से हरित साक्षरता

इको रूट्स फाउंडेशन पर्यावरण शिक्षा के लिए पारम्परिक बायोस्कोप के माध्यम से जल, जैव विविधता, ई–कचरे और कई अन्य पर्यावरणीय मुद्दों पर महत्वपूर्ण फिल्मों को प्रदर्शित करता है। सिनेमा देखने के पुराने उपकरण जैसे बायोस्कोप और ग्रामोफोन, मनोरंजन और संचार के दो पारंपरिक तरीके हैं। राकेश खत्री इन माध्यमों का प्रयोग बच्चो में पर्यावरण संरक्षण पर जागरूकता फैलाने के लिए करते हैं।

बायोस्कोप अभी भी एक आकर्षक उपकरण है। इसके उपयोग के लिए हाथ से चलने वाला प्रोजेक्टर रखा जाता है और रील के पीछे छोटा बल्ब होता है। प्रोजेक्टर चलाने के लिए हैंडल घुमाया जाता है और एक सामने स्थित लेंस के अंदर झाँकने वाला व्यक्ति संगीत के साथ सिनेमा का अनुभव करता है।

राकेश खत्री की पहल "ग्रीन सिनेमा बायोस्कोप" के तहत जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) और पर्यावरण के मुद्दों पर छोटी फिल्में बनाते हैं।

प्रकाशन के बारे में

'हरित खबर', एचसीएल–फाउंडेशन एवं वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया द्वारा प्रकाशित एक मासिक अखबार है जो पर्यावरण से जुडी खबरों और जरूरी जानकारियों को संजोने के साथ साथ इस काम में जन भागीदारी को बढ़ाने के लिए समर्पित है। पर्यावरण के मुद्दे पर केंद्रित एचसीएल–फाउंडेशन के प्रमुख कार्यक्रम एचसीएल–हरित के पार्टनर संगठनों के कार्यों और उपलब्धियों को एक मंच पर लाने और उनके बीच नेटवर्क स्थापित करने के उदेश्य से इस प्रकाशन का आगाज़ किया गया है। इस प्रकाशन के जरिये हम उम्मीद करते है कि यह देश में इस गंभीर मुद्दे पर एक सार्थक बहस छेड़ने में सफल होगा और साथ ही आम लोगों, विशेषकर बच्चों और युवाओं को और अधिक संवेदनशील बनाने में भी मददगार होगा।

एच सी एल फाउंडेशन

एचसीएल फाउंडेशन देश की प्रतिष्ठित आई टी कंपनी एचसीएल टेक्नोलाजी के कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉसिबिलिटी कार्यक्रमों को लागु करती है। देश ही नहीं बल्कि दुनिया के अनेक विकासपरक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए फाउंडेशन के अपना योगदान दिया है। आम लोगों की ज़िंदगी में सकारात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से फाउंडेशन लम्बे समय तक असरदार रहने और गहरी पैठ वाले कार्यक्रमों को अपना सहयोग देती है।

वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया

ग्रासरूट्स कॉमिक्स को सूचना एवं संवाद के माध्यम के रूप आम लोगों को मुहैया कराने की प्रतिबद्धता के साथ वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया बीते बीस वर्षों से कार्यरत है। कॉमिक्स से जन अभियान कार्यक्रम के तहत अनेक मुद्दों पर सफल अभियान भी आयोजित किए हैं।

अंक–i, वर्ष–1 : नवंबर, 2021

(private circulation only)

इस प्रकाशन में महत्वपूर्ण सहयोग के लिए हम एच सी एल फाउंडेशन एवं हरित कार्यक्रम के सहयोगी संगठनों के आभारी हैं।

संपादकीय टीम : डॉ शांतनु बसु, हितेश सीताराम जलगांवकर, रवि कुमार शर्मा, ऐश्वर्या बालासुब्रमण्यम, आज़म दानिश | सार्थक मेहरा

संपादक: शरद शर्मा | कवर पेज रेखांकन : गरिमा शर्मा

web: www.hclfoundation.org | www.worldcomicsindia.com
email: hclfoundation@hcl.com | wci.hcl@gmail.com
Twitter: HCL_Foundation | Facebook: HCLFoundation

COMICS POWER! WORLD COMICS INDIA

एच सी एल फाउंडेशन एवं वर्ल्ड कॉमिक्स इंडिया की एक पहल

HCL FOUNDATION